CHAPTER 1, भारतीय गायिकाओं में बेजोड़- लता मंगेशकर

PAGE 8, अभ्यास

11:1:1: अभ्यास: 1

1. लेखक ने पाठ में गानपन का उल्लेख किया है। पाठ के संदर्भ में स्पष्ट करते हुए बताएँ कि आपके विचार में इसे प्राप्त करने के लिए किस प्रकार के अभ्यास की आवश्यकता है?

उत्तर: जिस प्रकार मनुष्य को मनुष्य कहलाने के लिए "मानवता" नामक गुण का होना अनिवार्य है, उसी तरह गीत में "गानपन" का होने अति आवश्यक हैं तभी इसे संगीत कहा जाता है। "गानपन" का मतलब है - गायन में कितना मिठास और मस्ती हैं। लता जी के गीतों में मस्ती और मिठास शत-

प्रतिशत भरे हुए हैं और यही उनकी लोकप्रियता का कारण रहा है। गीत में गानपन लाने के लिए, तेज आवाज के साथ गीत का अभ्यास करना आवश्यक है। शब्दों के उचित उच्चारण के साथ, उसकी आवाज़ में स्पष्टता होनी अति आवश्यक हैं। गाने में रस के अनुसार लय, और ताल होना जरुरी है।
श्रोताओ को गाने में स्वर और अर्थ स्पष्ट रूप से समझ में आना चाहिए। रागों की सुंदरता और शुद्धता पर ज्यादा जोर देने के बजाय गीत को मिठास , स्वाभाविकता और सही लय के साथ गाया जाना चाहिए।

11:1:1: अभ्यास: 2

2. लेखक ने लता की गायकी की किन विशेषताओं को उजागर किया है? आपको लता की गायकी में

कौन-सी विशेषताएँ नज़र आती हैं? उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर: भारत में लता जी को स्वरकोकिला कहा जाता है उनकी गायन की क्षमता से लो मुग्ध हो जाते है इसलिए लेखक ने लता जी के गायन में निम्नलिखित विशेषताएं उजागर की हैं:

1. **सुरीलापन -** लता जी की गायकी में बहुत ही माधुर्यता है। उनकी आवाज़ में अद्‍भुत मिठास, दृढ़ता, मस्ती और लय है, उनके गायन में सुरीलापन भरा है।

2. **निर्मल और भावपूर्ण स्वर -** जीवन को देखने के प्रति लता जी का रवैया उनके भावपूर्ण गायन की निर्मलता में दिखाई देता है।

3. **कोमलता और मधुरता -** लता जी के स्वरों में कोमलता और मधुरता है जो किसी को भी अपनी ओर आकर्षित और मग्ध करने की क्षमता रखते हैं।

4. स्पष्ट उच्चारण - लता जी के गायन की एक और खासियत है उनका स्पष्ट उच्चारण । उनके गीत में दो शब्द में अंतर होते हुए भी आपस में खूबसूरती से विलीन होकर मिल जाते हैं यह उनके गीतों को सहज और स्वाभाविक बनाते हैं।

5. शास्त्रीय शुद्धता - लता जी के गीतों में शास्त्रीय शुद्धता होती है। वह शास्त्रीय संगीत में पारंगत हैं। आवाज और शब्दावली के संगम के साथ, उनके गीत रंजकता जैसी सभी विशेषताओं को दर्शाते हैं। उन्होंने भक्ति, देशभक्ति, प्रेम और आराधना आदि के गीत गाए हैं, उनका हर गीत लोगों के मन को छू जाता है। गंभीर या हास्य गीत गाना बहुत आसान है। पर देशभक्ति गीत गाना मुश्किल है लता जी के गीत "ऐ मेरे वतन के लोगों ..." ने पूरे देश के लोगों सहित तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू को भी रुला दिया था। फिल्म "दिलवालेदुलहनियां ...."के गाये गए उनके गीतों ने युवाओं को मस्त

मुग्ध कर दिया था। गायन के मामले में लता जी का कोई जोड़ नहीं है वो वास्तव में सर्वश्रेष्ठ हैं।

11:1:1:अभ्यास:3

3. लेखक ने पाठ में 'गानपन 'का उल्लेख किया है। पाठ के संदर्भ में स्पष्ट करते हुए बताएं कि आपके विचार में इसे प्राप्त करने के लिए किस प्रकार के अभ्यास की आवश्यकता हैं।

उत्तर - 'गानपन' का शाब्दिक अर्थ है: - ऐसा गायन जो एक सामान्य व्यक्ति को भी प्रभावित कर सके।देखा जाये तो ऐसे गायन की कला वास्तव में, लता जी में है।उनका सदैव प्रयास रहता है गीतों को मन की गहराइयों से गाया जाये।और इसी प्रयास ने उन्हें काफी हद तक सफल भी किया जिस तरह इंसान बनने के लिए 'इंसानियत' का होना जरूरी है,

उसी तरह संगीत के लिए भी गानपन का होना बहुत जरूरी है। और यही गानपन की क्षमता लता जी की लोकप्रियता का मुख्य कारण है। अपने गायकी में यह गुण लाने के लिए, गायक को बहुत कोशिश करनी चाहिए।
साथ ही गीत के बोलों में उच्चारण का स्पष्ट होना बहुत जरुरी है गीत गाने के लिए स्वरों का उपयुक्त ज्ञान होना भी अति आवश्यक हैं। स्वरों का उच्चारण जितना स्पष्ट होगा, संगीत उतना ही मधुर होगा। स्वर, लय, ताल, का सूक्ष्मा से अध्यन करने के बाद उन्हें अपने संगीत में लाने का प्रयास करना चाहिए।

11:1:1:अभ्यास:4

4. संगीत का क्षेत्र ही विस्तीर्ण है। वहाँ अब तक अलक्षित, असंशोधित और अदृष्टिपूर्व ऐसा खूब बड़ा प्रांत है तथापि बड़े जोश से इसकी खोज और उपयोग चित्रपट के लोग करते चले आ रहे हैं -

इस कथन को वर्तमान फ़िल्मी संगीत के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : संगीत का क्षेत्र बहुत बड़ा और विस्तृत है,संगीत में अपार संभावनाएँ छिपी हुई है इस क्षेत्र में हर समय कुछ नया करने की अधिक गुंजाइश है। संगीत में कई राग, धुन, ताल, वाद्य, और स्वर अभी भी अछूते हैं, और इसमें कई सुधार और कई नए प्रयोग निरंतर हो रहे है। अगर वर्तमान में हम संगीत सुने तो हम पाते हैं कि हर रोज नई धुनें, नए प्रयोग और नए स्वर सुनाई दे रहे हैं। आज शास्त्रीय संगीत, लोक गीत, प्रांतीय गीत और पश्चिमी गीतों को बड़े पैमाने पर अपनाया जा रहा है। लोकगीतों और पश्चिमी गीतों को मिला कर नए गीत बनाये जा रहा है नए नए ग्रामीण संगीतो का भी प्रयोग कर के नए नए तरीके के संगीत बनाये जा रहे है सीधे तौर पर कहा जाये हर दिन संगीत में

नयापन आ रहा है और अभी भी कई सुर और ताल का प्रयोग होना संगीत की दुनिया में अभी बाकि हैं।

11:1:1: अभ्यास:5

5. चित्रपट संगीत ने लोगों के कान बिगाड़ दिए- अकसर यह आरोप लगाया जाता रहा है। इस संदर्भ में कुमार गंधर्व की राय और अपनी राय लिखें।

उत्तर: अक्सर यह आरोप लगाया जाता है कि चित्रपट संगीत के लोगों के कान खराब कर दिए हैं लेकिन कुमार गंधर्व इस आरोप से सहमत नहीं हैं। कुमार गंधर्व की नज़र में, संगीत में चित्रपट संगीत आने के बाद काफी सुधार हुआ है। और इसकी वजह से, श्रोताओ को गीतों को समझने में आसानी होती हैं। आज के समय में लोगों को संगीत से काफी लगाव

है। आज सामान्य वर्ग भी संगीत की लय को सूक्ष्मता से समझने में सक्षम है।

चित्रपट संगीत के संदर्भ में, मेरी राय कुछ अलग है मुझे लगता है कि चित्रपट संगीत से संगीत में अश्लीलता और शोर का बढ़ावा हुआ है। यद्यपि चित्रपट संगीत से संगीत में सुधार हुआ है, लेकिन यह बात केवल पुराने संगीत तक ही सीमित रह गई है। जहां पुराना संगीत मधुरता और जुड़ाव लाता था, वहीं आज का संगीत भयानक, शोर और तनाव पैदा करने वाला हो गया है। गाने के बोल विचित्र, अश्लील और अजीब हैं। आज चित्रपट संगीत एक भागदौड़ भरी जिंदगी की तरह उबाऊ और नीरस होता जा रहा है।हो सकता है आने वाले समय में इस में कुछ सुधार हो और कुमार गंधर्व का कथन सही साबित हो।

11:1:1: अभ्यास:6

6. शास्त्रीय एवं चित्रपट दोनों तरह के संगीतों के महत्त्व का आधार क्या होना चाहिए? कुमार गंधर्व की इस संबंध में क्या राय है? स्वयं आप क्या सोचते हैं?

उत्तर: "संगीत जो श्रोताओं और संगीत प्रेमियों को अधिक आनंदित कर सकता है, वह संगीत बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाएगा, चाहे वह शास्त्रीय संगीत हो या चित्रपट संगीत। दोनों ही संगीत का मूल आधार कर्ण प्रिय होना चाहिए। संगीत को मज़ेदार बनाने में गीत की क्षमता का महत्व होना चाहिए।अगर शास्त्रीय संगीत में रंजकता का अभाव है, तो यह बिल्कुल नीरस, बदसूरत हो जाएगा और इसमें कुछ कमी महसूस होगी। गीत में गानपन का होना आवश्यक है। गीत की सारी मिठास, सारी ताकत उसके उपर निर्भर है। रंजक के स्वर को रसिक वर्ग

के लिए कैसे प्रस्तुत किया जाये इसके लिए बैठक करनी चाहिए। कि कैसे श्रोताओं के लिए अच्छे संगीत प्रस्तुत किये जाये जो उन्हें निराश और उबाऊ न लगे। इसलिए, लेखक की राय बिल्कुल सही है और मुझे लगता है कि हर कोई इससे सहमत होगा।